पाठ-13

मन के जीते जीत

स्वाधीनता दिवस पर सामूहिक रूप से समारोह मनाया जाता है। इसमें सभी संप्रदायों के लोग भाग लेते हैं। शीला के पिताजी हर साल इस समारोह में भाग लेते हैं। शीला को भी समारोह में भाग लेने की इच्छा हुई।

शीला : पिताजी, मैं भी आपके साथ स्वाधीनता दिवस का समारोह देखने जाऊँगी।

पिताजी : तुम भी जाओगी क्या? अगर जाना है, तो जल्दी-जल्दी तैयार हो जाओ, नहीं तो देर हो जाएगी।

नहा-धोकर नाश्ता करने के बाद बाप-बेटी दोनों घर से निकल पड़े। समारोह-स्थल पहुँचते-पहुँचते उन्हें आधा घंटा लग गया। समारोह शुरू होने ही वाला था। दोनों अपने-अपने स्थान पर बैठ गए। इतने में 'जन-गण-मन' संगीत चारों तरफ गूंज उठा। सभी सम्मान में खड़े हो गए।

उस दिन शीला बहुत खुश थी। खासकर तरह-तरह के नृत्य देखकर और गाना सुनकर उसे बहुत आनंद मिला। शीला को वह गाना बहुत पसंद आया--

सारे जहाँ से अच्छा, हिंदोस्ताँ हमारा।

.....

कई लड़के-लड़कियाँ कतारों में खड़े होकर यह गीत गा रहे थे। शीला भी गुनगुनाने लगी। पर कब उसने गुनगुनाना बंद किया पता ही नहीं चला। किसी को देखकर वह दुबिधा में पड़ गई।

उसने पिताजी से कहा- पिताजी, देखिए, देखिए! उस लड़के को देखिए जो बगल में खड़ा होकर गा रहा है। उसने हाथ में बैसाखी क्यों ले रखी है पिताजी ? और वह लड़की! वह काली ऐनक पहनी हुई है! लगता है वह आँखों से देख नहीं पाती।

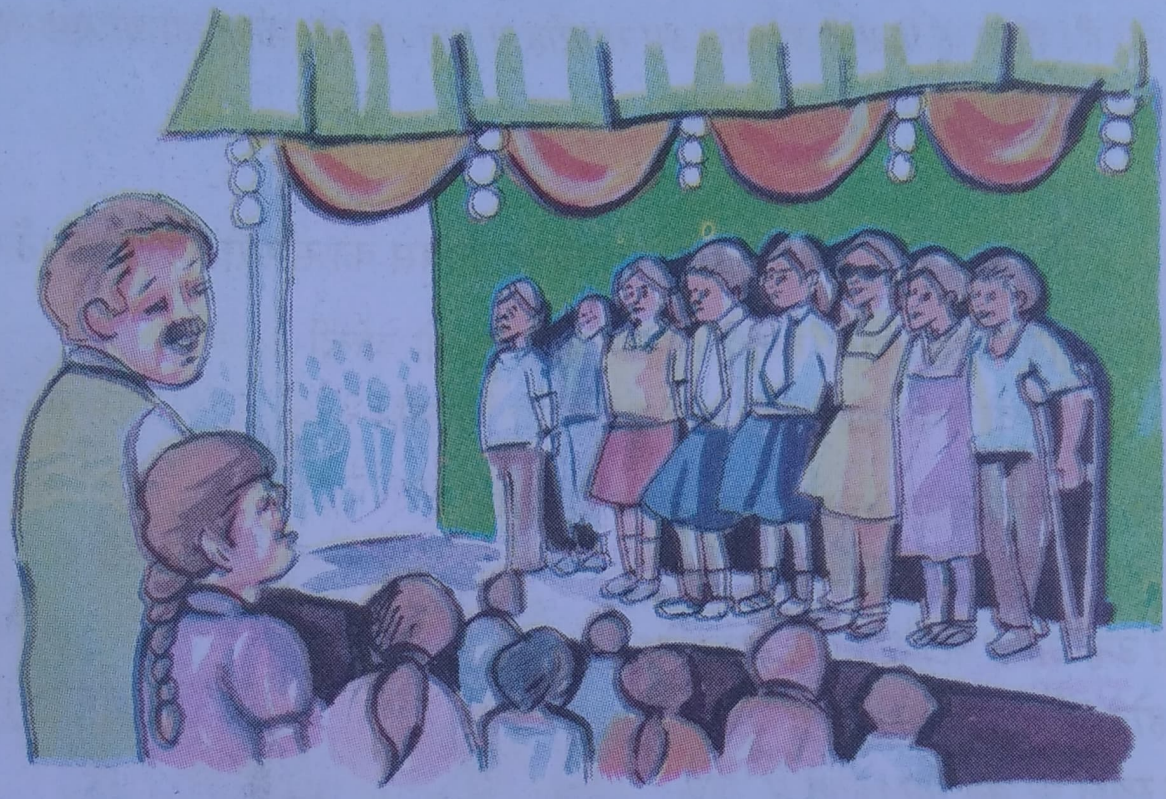

पिताजी : तुम्हारा अनुमान ठीक है बेटे। हाँ, वह दृष्टिहीन है। और उस लड़के को जो देख रही हो, वह ठीक तरह से चल नहीं पाता। इसलिए बैसाखी के सहारे खड़ा है। पर एक बात याद रखना बेटे, वे भी तुम लोगों की तरह ही हैं।

शीला : पिताजी, क्या वे स्कूल जाते हैं ?

पिताजी : हाँ, क्यों नहीं ?

समारोह समाप्त हुआ। दोनों पैदल ही घर की तरफ रवाना हुए। पिताजी ने फिर बातचीत शुरू की :

पिताजी : हाँ बेटे, तुमने स्कूल जाने की बात पूछी थी न! सुनो, शायद तुम्हें मालूम नहीं कि आजकल एकसाथ सभी बच्चों की पढ़ाई-लिखाई की व्यवस्था हो रही है। कानों से कम सुननेवाले, आँखों से कम देखने वाले, ठीक तरह से बोल न पाने वाले, अच्छी तरह से चल न पानेवाले- ऐसे सभी बच्चे, तुमलोगों के विद्यालय

में ही पढ़ सकते हैं। खुशी की बात यह है कि आजकल सभी प्रकार के विद्यार्थियों को एकसाथ एक ही विद्यालय में पढ़ाने की व्यवस्था की जा रही है।

शीला : पिताजी, उस दिन मैंने मामाजी के घर में सूरदास जी की तस्वीर देखी थी। वे भी तो दृष्टिहीन थे न! क्या वे भी दृष्टिहीन विद्यालय में पढ़ते थे?

पिताजी : नहीं बेटे, सूरदास जी के जमाने में इस तरह के विद्यालय थे ही नहीं। वे बहुत ही अनुभवी थे। वे अपनी साधना और लगन के बल पर ही इतने महान कवि बने।

शीला : पिताजी, तब तो शारीरिक रूप से बाधाग्रस्त व्यक्ति भी सफल हो सकते हैं!

पिताजी : हाँ, बेटे, तुमने सही समझा। मैं अपने एक सहपाठी की बात बताता हूँ। सुनो, हमारे साथ एक लड़का पढ़ता था। वह बहुत तेज था। नाम था जोसफ। उसे ठीक तरह से सुनाई नहीं देता था। वह कानों में सुनने की मशीन लगाया करता था। वह बढ़िया गाता भी था। उस दिन मैंने सुना कि वह आजकल किसी महाविद्यालय में अध्यापक है।

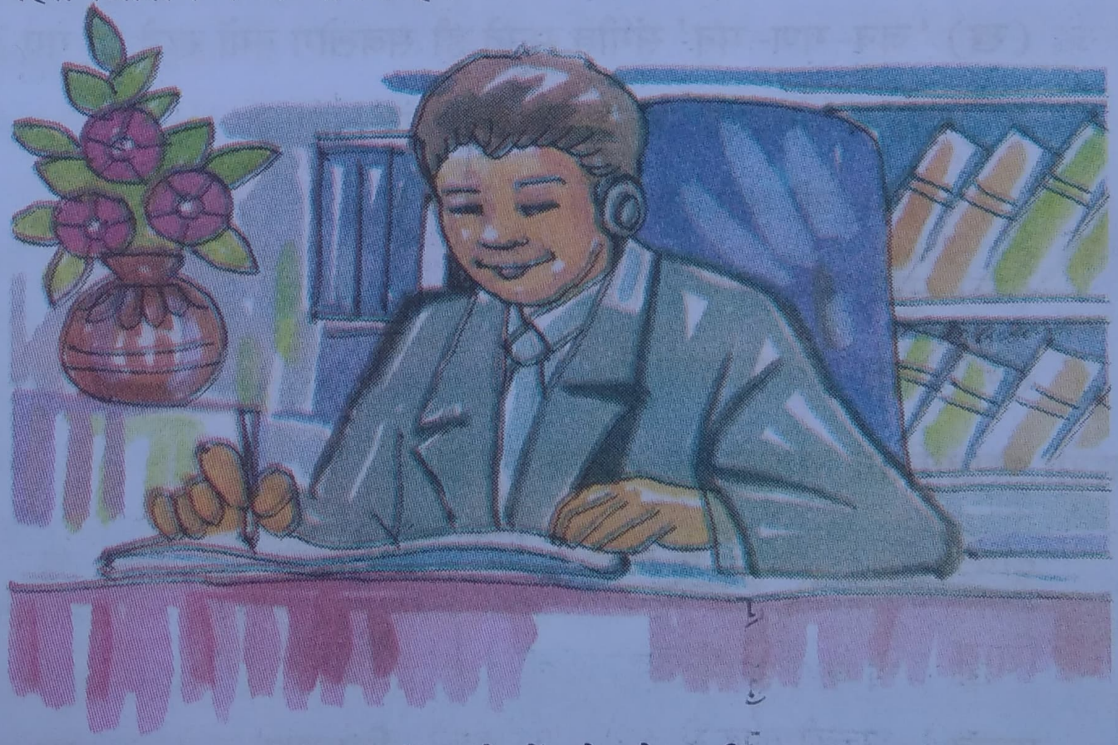

शीला अध्यापक जोसफ के बारे में सोचने लगी।

अभ्यास-माला

1. आओ, विशेष ध्यान देने योग्य लोगों के बारे में चर्चा करें :

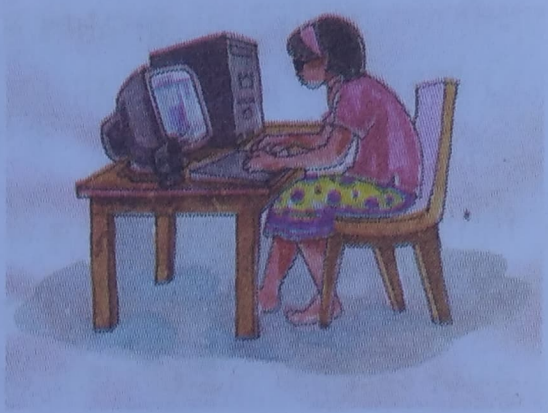

2. उत्तर दो :

(क) शीला अपने पिताजी के साथ कहाँ गई थी ?

(ख) 'जन-गण-मन' संगीत सुनते ही सबलोग क्यों खड़े हो गए ?

(ग) शीला को कौन-सा गीत बहुत पसंद आया ?

(घ) शीला को क्यों आनंद मिला ?

(ङ) सूरदास कौन थे ?

(च) जोसफ क्या करते हैं ?

3. आओ, रेखांकित अक्षरों को तोड़कर देखें :

दृ<u>ष्टि</u>	ष्ट = ष् + ट	सा<u>हित्य</u>	त्य ------
शि<u>ष्य</u>	ष्य ------	<u>स्कू</u>ल	स्क ------
<u>प्र</u>मुख	प्र ------	वि<u>श्वा</u>स	श्व ------

4. आओ, जानकारी प्राप्त करें :

दृष्टिहीन लोग कैसे पढ़ते हैं ?

दृष्टिहीन लोगों के लिए प्रयुक्त लिपि **ब्रेल** लिपि है। यह लिपि हाथ के स्पर्श से पढ़ी जाती है।

फ्रांस के रहनेवाले लुई ब्रेल इसके जनक हैं।

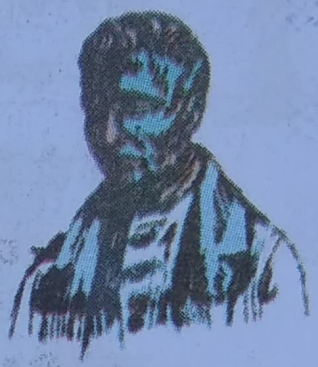

5. आओ, हिंदी के कुछ प्रमुख कवि-कवयित्रियों के नाम जानें :

मीरांबाई	कबीरदास	तुलसीदास	जायसी
भारतेंदु हरिश्चंद्र	महादेवी वर्मा	जयशंकर प्रसाद	मैथिलीशरण गुप्त

6. किसने कहा, लिखो :

(क) ''वे भी तुमलोगों की तरह हैं।'' .....

(ख) ''क्या वे भी दृष्टिहीन विद्यालय में पढ़ते थे ?'' .....

(ग) ''वह कानों में सुनने की मशीन लगाया करता था।''.....

7. उत्तर लिखो :

(क) ''ऐसे सभी बच्चे तुमलोगों के विद्यालय में ही पढ़ सकते हैं।''- यहाँ 'ऐसे सभी बच्चे' किन्हें कहा गया है ?

(ख) सभी बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के बारे में पिताजी ने क्या कहा ?

(ग) दृष्टिहीन सूरदास जी महान कवि कैसे बने ?

(घ) विशेष ध्यान देने योग्य व्यक्ति कौन-कौन हो सकते हैं ?

8. आओ, समूह में चर्चा करें :

विशेष ध्यान देने योग्य व्यक्ति के अधिकार क्या-क्या हैं ?

9. आओ, समझ लें :

वह बहुत ही अनुभवी **था**।
तुम्हारा अनुमान ठीक **है**।

इन वाक्यों में '**था**' और '**है**' से किसी काम के करने या होने का बोध होता है। ये क्रिया के रूप हैं।

10. आओ, सस्वर पढ़ें :

छात्र-छात्रा पढ़ रहे हैं।

पति-पत्नी बैठे हैं।

इन वाक्यों के रेखांकित शब्दों से पुरुष और स्त्री का बोध होता है।

ऐसे ही *पुरुष* और *स्त्री* के बोध करानेवाले शब्द लिखो :

बहन	----------	मामा	----------
लड़की	----------	बालक	----------
बकरी	----------	पिता	----------

11. यहाँ सूरदास के बारे में कई बातों का उल्लेख किया गया है :

- जन्म- 1478 ई. (आनुमानिक)
- जन्म स्थान - ब्रज का सीही नामक गाँव
- हिंदी के कवि
- मुत्यु - 1583 ई. (आनुमानिक)

अब इन बातों के आधार पर चार वाक्य लिखो।

12. आओ, पहेलियाँ बूझें और लिखें :

(क) तीन अक्षर का मेरा नाम
उल्टा सीधा एक समान।

(ख) ना मारा ना खून किया,
बीसों का सिर काट लिया।

(ग) पंछी एक देखा अलबेला
पंख बिना उड़ रहा अकेला,
बांध गले में लंबी डोर
नाप रहा अंबर का छोर।

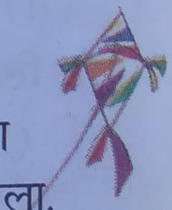

13. परियोजना : हिंदी के कवि-कवयित्रियों की तस्वीरों से एलबम बनाओ।

14. आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शुरू	= आरंभ	तस्वीर	= छवि, चित्र
दुबिधा	= असमंजस	मशीन	= यंत्र
नाश्ता	= जलपान	बैसाखी	= पैरों से चल न पाने वाले व्यक्ति का सहारा